Nai Dunia (Indore), 9th January 2025, Indore City Page – IV

डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों से रोगाणु खत्म करेगा आइआइटी इंदौर

'पोर्टेबल किट का विकास- पारंपरिक रूप से उपज के उपरांत प्रबंधन का एक विकल्प' परियोजना पर काम करेगा

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर : देश के प्रमुख संस्थानों में एग्रीटेक डोमेन में नई तकनीकों का विकास किया जा रहा है। इन तकनीकों को ग्रीनटेक समुदाय के सामने लाने और लैब से मार्केट तक लाने के लिए भी कई प्रयास हो रहे हैं। इसी क्रम में आइआइटी बाम्बे के आइओटी व आइओई के प्रौद्योगिकी नवाचार केंद्र में एटीएमएएन 2.0 ग्रैंड फिनाले का आयोजन किया गया था, जिसमें आइआइटी इंदौर ने जीत हासिल की है। कार्यक्रम में सरकार के उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास राज्य मंत्री डा. सुकांत मजूमदार और डीएसटी के सचिव प्रो. अभय करंदीकर उपस्थित थे।

इस प्रतियोगिता में उपज से पहले के प्रबंधन, कृषि उपज भंडारण सुविधाएं और वितरण नेटवर्क, उपज के बाद का प्रबंधन और मार्केट इंटेलिजेंस पर परियोजनाओं के क्रियान्वयन के लिए शैक्षणिक जगत के शोधकर्ताओं से प्रस्ताव बुलवाए गए थे। इनमें से सात सर्वश्रेष्ठ प्रस्तावों को पिच फेस्ट के माध्यम से

माडल को समझाते आइआइटी इंदौर के शोधकर्ता ● सौजन्य

चुना गया है, जिन्हें कृषि-तकनीक के विकास और कार्यान्वयन के लिए तकनीकी विकास सहायता और प्रयोगशाला से मार्केट तक मार्गदर्शन के साथ अनुदान के माध्यम से समर्थन दिया जाएगा। प्रत्येक प्रस्ताव को दो करोड़ रुपये तक का अनुदान दिया जाएगा। आइआइटी इंदौर 'पोर्टेबल किट का विकास- पारंपरिक रूप से उपज के उपरांत प्रबंधन का एक विकल्प' परियोजना पर काम करेगा। आइआइटी इंदौर के डा. देबायन सरकार ने बताया कि अपर्याप्त भंडारण सुविधाओं के कारण कृषि उत्पादों के लिए वैकल्पिक तकनीक का आविष्कार किया गया है। इसका लक्ष्य एक पोर्टेबल किट विकसित करना है, जिसमें एक छोटा, विटामिन बी2 स्प्रे घोल शामिल होगा। यह एक फ्लैश दृश्य प्रकाशस्रोत के साथ फोटोसेंसिटाइजर के रूप में कार्य करेगा। यह किट खुले और पैक खाद्य घटकों में रोगाणुओं को फोटोडायनामिक निष्क्रिय कर सकेगा।

इंदौर की एमएसएमई को उत्पादन के गुर सिखाएंगे

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर : इंदौर की एमएसएमई कंपनियां उत्पादन लागत को किस तरह कम कर सकती हैं और उत्पादों को कैसे बेहतर बना सकती हैं, इसके लिए यूनिवर्सिटी आफ कैंब्रिज और आइआइटी इंदौर उद्योगपतियों को मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। बुधवार को इसको लेकर कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें यूनिवर्सिटी आफ और कैंब्रिज और आइआइटी इंदौर के प्राफेसर सम्मिलित हुए और शहर की कई प्रमुख एमएसएमई और बड़ी कंपनियों के प्रतिनिधियों से चर्चा की।

प्रतिष्ठित कंपनियों के पाक तकनीक से लेकर मैनपावर जैसी सुविधाएं उपलब्ध होती हैं, जिससे वे अपनी उत्पादन प्रक्रिया में कई बदलाव कर पाते हैं, लेकिन छोटी कंपनियों और एमएसएमई के संसाधन सीमित होते हैं। एमएसएमई उत्पादन क्षमता को मौजूदा तकनीकों के साथ बेहतर बना सकती है, इसके लिए

प्रोफेसर डंकन मैकफर्लेन। ● नईदुनिया

कार्यशाला आयोजित की गई। यूनिवर्सिटी आफ कैंब्रिज के इंस्टीट्यूट फार मैन्युफैक्चरिंग के सहयोग से आइआइटी इंदौर और आइआइटीआइ दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन ने 'डिजिटल मैन्युफैक्चरिंग आन अ शूस्ट्रिंग' पर कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें यूनिवर्सिटी के प्रो. डंकन मैकफर्लेन, प्रो. अजित परलिकाड व प्रो. आनंदरूप मुखर्जी और आइआइटी इंदौर के प्रो. भूपेश कुमार लाड़ और विभारे पंडागरे शामिल हुए।

क्या है शूस्ट्रिंग

शूस्ट्रिंग प्रोग्राम को यूनिवर्सिटी आफ कैंब्रिज द्वारा विकसित किया गया है। इसके माध्यम से एमएसएमई को कम लागत और कम जोखिम वाले डिजिटल समाधान प्रदान किए जा सकते हैं। इस प्रोग्राम में सामान्य तौर पर बाजार में मौजूद तकनीकों का ही उपयोग किया जाता है, जिससे तुरंत लाभकारी समाधान मिल सके। इसके जरिए कंपनियों की उत्पादन क्षमता को बेहतर बनाने के साथ ही कर्मचारियों में तकनीकी ज्ञान भी विकसित किया जाता है, ताकि वे भविष्य में डिजिटल बदलाव के लिए तैयार हो सकें। चुने हुए प्रतिभागियों को 10 जनवरी को आइआइटी में होने वाले सत्र में बुलाया जाएगा।